शिक्षण संस्थाओं में पर्यावरण शिक्षाः–एक पहल

20

ज्ञान प्रकाश*

यंत्रीकरण एवं औद्योगिकरण की विकसित तथा अर्द्धविकसित देशों में जिस गति से वृद्धि हो रही है उससे कई पर्यावरणीय समस्याएं स्वतः सामने आ रही हैऋ जैसे भोजन, साफ–सफाई, कृषि, गृह निर्माण और रोजगार आदि। इन पर ये देश प्रर्याप्त ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। प्राकृतिक संसाध्नों के आधर का दुरूपयोग तीसरी दुनिया की पर्यावरण संबंधी बड़ी समस्याओं का मूल कारण है, काफी हद तक ये समस्याएं विश्व की महानगरीय व्यवस्था को कायम रखने के लिए संसाधन जुटाने के दबाव के कारण पैदा होती है। बहु राष्ट्रीय कंपनियों ने उत्पादन–प्रक्रिया को महानगरों से जोड़ दिया है, इससे स्थानीय आबादी की आवश्यकताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

अधिकांश देशों ने औद्योगिकरण से होने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधन करने हेतु अपने स्तर पर प्रयास करना भी प्रारंभ कर दिया है। ये देश शिक्षा के माध्यम से इन विभिन्न समस्याओं का निराकरण करने पर गंभीरता से सोच रहे हैं। शिक्षण संस्थाओं एवं समुदाय का करीबी संबंध इस दिशा में बहुत कारगर सिद्ध हो सकता है। इसलिए स्कूल के विभिन्न विशयों के पाठ्यक्रमों में पर्यावरण–संतुलन संबंधी पाठों का समावेश किया जाना समय की पुकार है। मानव–विकास के विभिन्न पहलुओं में और आधुनिक सभ्यता के प्रतिफल के रूप में समाज में पर्यावरण–शिक्षा एवं उस पर गहन अध्ययन करने की नितांत आवश्यकता है। अतः पर्यावरण–शिक्षा के द्वारा भविष्य में होने वाले विभिन्न क्षेत्रों के प्रदूषणों पर रोक लगाए जाने की पूरी–पूरी संभावनाएं बन सकती हैं। यदि विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों व तकनीकी शिक्षण संस्थानों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण–शिक्षा को सही रूप में छात्राों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए तो तृतीय विश्व की जनसंख्या में इस कार्यक्रम का प्रतिफल स्वतः ही नजर आने लगेगा व इस विषय में सभी जागरूक हो जाएंगे।

शिक्षण संस्थाएंः–

पर्यावरण के लिए शिक्षण संस्थाओं का बहुत हो महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। विज्ञान संकाय के छात्राों को भी शिक्षेतर पाठ्यक्रम द्वारा पारिस्थितिकी विज्ञान के व्यवहारिक कार्यक्रम में साथ लेना चाहिए। क्योंकि आदर्शवाद में वे किसी से पीछे नहीं होते। अध्यापकों के नेतृत्व में ये लोग पर्यावरण का प्रत्यक्ष अध्ययन

* *पुस्तकालयाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय राजगढ़, सिरमौर*

करके संबंधित क्षेत्रों के लोगों को सुरक्षा का महत्व बताएं। पर्यावरण की उपेक्षा की हानियों से अवगत करवाएं और उससे व्यवहारिक कार्यक्रम में शिविरों के माध्यम से भाग लें। ये नाटकीय तरीके से पर्यावरण के विनाश के दुष्परिणाओं के बारे में जनता को अच्छी तरह से समझा सकते हैं। ऐसी सफलता सरकारी तंत्रा से असंभव हैं।

इस समय पर्यावरण में बड़ी विकट स्थिति है। प्रकृति का सारा क्रम उलट गया है। जिसमें अब मनुष्य सबसे अध्कि स्थान पर मांसाहारी दूसरे स्थान पर है और वनस्पति सबसे कम तीसरे स्थान पर आती है। अतः जिस जनसंख्या पर रोक आवश्यक है उसी प्रकार पर्यावरण को असंतुलित करने वाले, घटकों पर नियंत्राण भी आवश्यक है।

पर्यावरण शिक्षा और चेतनाः–

पर्यावरण शिक्षा और चेतना कार्यक्रम का व्यवहारिक होना अति आवश्यक है। इसे काल्पनिकता से दूर रखने की आवश्यकता है। भारत की ग्रामीण जनसंख्या द्वारा पर्यावरण के संदर्भ में सुरक्षात्मक और विनाशकारी दोनों प्रकार के कार्य हो रहे हैं। यह एक अति गंभीर समस्या है। इसके सुधर के लिए ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच कर पर्यावरणकी समस्याओं का अध्ययन और उनके समाधन के लिए भोजना का निर्माण आवश्यक है।

इसलिए प्राथमिक स्तर से माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा और विश्वविद्यालय स्तर तक और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत भी इसके बारे में व्यावहारिक विधि ा से ज्ञान दिया जाना चाहिए। मानवीय एवं राष्ट्रीय आकांक्षों के अनुरूप शिक्षा–दर्शन एवं पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षा के दर्शन एवं पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना आवश्यक है। पर्यावरण–संतुलन एक राष्ट्रीय समस्या है। अतः इसके बारे में भावी पीढ़ी को क्रमब एवं व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना हमारा राष्ट्रीय दायित्व बन गया है।

अतः पारिस्थितिकी तंत्रा एवं पर्यावरण को पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में तैयार करने की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकता है। आज के युवा कल के राष्ट्र निर्माता होंगे और उन्हें विभिन्न प्रकार के कार्य–क्षेत्राों में अपने स्तर पर निर्णय लेने होंगे। अतः इस अवस्था में भावी पीढ़ी को ऐसी पारिस्थितिकी प्रदान की जाए, जिससे शुद्ध पर्यावरण से होने वाले लाभों का अवबोध्न करते हुए उसमें पर्यावरणीय अभिवृतियों का विकास हो सके। राश्ट्रीय एवं अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर आजकल शिक्षण संस्थाओं का जाल बिछा हुआ है। इनका प्रमुख उद्देश्य यह होना चाहिए कि संस्थाओं का समाज में ले जाएं और समाज को संस्थाओं में लाने का सफल प्रयास करना चाहिए। इन शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से पर्यावरण–संतुलन

बनाए रखने एवं उसके असंतुलित होने से समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में ज्ञान देकर चेतना पैदा करने जैसे कार्य किए जा सकते हैं। आज पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धरण कर चुकी है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यः–

विद्यार्थियों में पर्यावरण के संरक्षण और उसके विकास हेतु संचेतना पैदा करने के लिए शिक्षण संस्थाओं के उद्देश्यों को भली–भांति परिभाशित करने की आवष्यकता है। आज के युग में हमें शुद्ध सामाजिक पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों से अध्कि लाभ प्राप्त हो रहे हैं। अतः हमें विशेष रूप से स्थानीय परिस्थितिकी तंत्रा के संतुलन को अनुरूप संतुलित करना चाहिए और उनके वैकल्पिक साधनों को ढूंढना चाहिए जिसमें प्राकृतिक साधन नष्ट होने से बच जाए और पारिस्थितिक संतुलन बना रहे।

मानव की आवश्यकताओं, प्राकृतिक दोहन की क्षमताओं और पर्यावरण के बीच समायोजन होना जरूरी है। छात्राों के सामने विषय वस्तु और प्राकृतिक संसाधनों को इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए कि उसके संरक्षण और विकास हेतु वे अपना पूरा योगदान कर सकें। संतुलित व्यक्तित्व का विकास शुद्ध सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण में ही संभव हो सकता है। अतः शुद्ध पर्यावरण को बनाए रखने के लिए स्कूल और कॉलेज के समय में ही हमें मिलकर निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करनी होगीः–

1. व्यक्तिगत, बाहरी और मूल रूप से मानव, प्राकृतिक साधन और जीव–जंतु किस प्रकार एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं– इसका ज्ञान कराया जाना आवश्यक है।

2. विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों को प्रकृति के आस–पास तथा अलग–अलग रहने से क्या लाभ और हानियां होती है–इसके संबंध में विश्लेषणात्मक ढ़ंग से छात्राों को ज्ञान दिया जाना चाहिए।

3. हम जीवन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहे हैं, उनका पुनः निर्माण नहीं किया जा सकता। भविष्य में प्रकृति के संसाधनों के समाप्त हो जाने की आशंका से छात्राों को अवगत कराना।

4. पारिस्थितिक–तंत्र को संतुलित बनाए रखने के उद्देश्य से विभिन्न जीवों एवं पेड़ पौधें का पर्यावरण में बना रहना उपादेय है– इसका अवबोध करवाना।

5. जल्दी और विलंबकारी परिवर्तनों के लाभ तथा हानियों से छात्राों को अवगत करवाया जाना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षणः–

पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न स्तर क विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा की विषयों से जोड़कर छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति निम्नलिखित कौशल का विकास हो ताकि वे भविष्य के भावी पर्यावरण संरक्षण बन सके।

1. पर्यावरण का नाश करने के प्रसंग में सोची गई परिकल्पनाओं को एकत्रित कर, उनका विश्लेषण कर सही परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए उसका निदान सोचने का कौशल पैदा करना।
2. विभिन्न प्रकार के प्रदूषण फैलाने वाले तथ्यों को एकत्रित कर उन्हें समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने के कौशल का विकास करना।
3. कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मक के आधर पर शुद्ध पर्यावरण के विकास में विज्ञान द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा करना।
4. विभिन्न कृत्यों से होने वाली पर्यावरणीय हानियों के संबंध में पूर्व घोषणा करने की दक्षता पैदा करना और उसका मूल्यांकन करते हुए सही स्थिति का ज्ञान करने की क्षमता का विकास करना।
5. समाज का सदस्य होने के नाते प्रकृति के संरक्षण की भावना एवं व्यवहार का विकास करना।

पारिस्थितिकी एवं स्थानीकरणः–

यह बहुत आवश्यक हो गया है कि छात्रों का कार्य क्षेत्र स्थानीय स्तर तक सीमित कर उनके स्थानीय प्रकृति ज्ञान को बढ़ाया जाए। उन्हें स्थानीय पर्यावरण की विसंगतियों, उसके कारणों तथा उसमें क्या सुधर किया जा सकता है, इस विशय में प्रशिक्षित किया जाए ताकि वह बाद में बड़े क्षेत्रा में संरक्षण कार्य हेतु तैयार हो सके।

विकासशील देशः– जिनमें भारत भी शामिल है, पर्यावरण शिक्षा को इस आवष्यकता का अनुभव करते हैं। आधुनीक मशीनीकरण के कारण सांस्कृतिक रूप से मिली हमारी विरासत छिन्न–भिन्न हुई है विशेष रूप से विकासशील देशों में आज यह अधिक चिंता का विषय है। कुछ विशेष विषय तो विचित्रता लिए हुए हैं। विभिन्न प्रकार के उद्योगों द्वारा प्रदूषण और अनुचित ढ़ंग से प्राकृतिक संसाधनों का वर्गों के लोगों के लिए न्यूट्रेशन, सफाई, गृह निर्माण, कृशि एवं नियोजन आदि विषयों पर विशेष ध्यान देते हुए पर्यावरण शिक्षा की विशय वस्तु में इनका समावेश करने की आवश्यकता है। विकास और उससे प्रभावित होने वाले पर्यावरण का अध्ययन

वांछित है। इससे पारिस्थितिकी का संतुलन पुनः स्थापित, और वन्य जीवों की सुरक्षा हो, हमें पौष्टिक भोजन तथा शुद्ध पानी आदि प्राप्त हो सके।

पर्यावरण–शिक्षा की विषय वस्तु के बारे में विवादास्पद दृष्टिकोण बना हुआ है। क्या पर्यावरण–शिक्षा की विषय वस्तु के स्वीकृत रूप में सहभागिता को अपनाया जाए? ऐसा करने का अर्थ हुआ कि हम छात्राों को पर्यावरण–संरक्षण में सहायता करते हैं। जिससे उन्हें सही रूप में पर्यावरण को संतुलित करने में अहम् भूमिका अदा करने का अवसर मिलता है। इसका यह आशय कदापि नहीं कि केवल उच्च ढंग से प्रदत शिक्षा ही पर्यावरण को बनाए रख सकती है। लेकिन इससे भी बढ़ कर बात यह है कि सामाजिक क्रियाकलाप से इसका जुड़ाव अवश्य होना चाहिए। इसके लिए अध्यता को विकल्पों की पुर्नपहचान करने, पर्यावरण के दुष्प्रभावों के बारे में पूर्व घोषणा करने, ऐसे दुष्प्रभावों के निवारणार्थ प्रभावशाली कदम उठाने तथा प्रगति के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में सुविधा होगी, जिससे सही ढ़ंग से समायोजन संभव होगा।

पर्यावरण–शिक्षा में कौशल का क्षेत्रा इस प्रकार है– सामाजिक कार्य की पहचान करना, विकल्प ढूंढना, भविष्यवाणी करना, उसके संभावित प्रभावों के बारे में जानना, कार्यक्रम को क्रियान्वित करना, उसके संभावित प्रभावों के बारे में जानना, कार्यक्रम को क्रियान्वित करना, उसकी प्रगति का मूल्यांकन करना तथा एकषन प्लान में पारस्परिक समायोजन करना आदि।

पर्यावरण–शिक्षा केवल चेतना पैदा करने के लिए नहीं है, बल्कि यह ऐसे व्यवहार का प्रोत्साहित करती है जो मूलभूत समस्याओं के समाधन मे सहायक होता है। व्यावहारिक दृष्टि से छात्रा एवं अध्यापक दोनों कक्षा–कक्ष में इंटर–एक्शन के माध्यम से समस्या का समाधन ढूंढते हैं। पर्यावरण समाज में अहम मुद्दा है उसके अध्यापन में कौन सी विधि का समाधन ढूंढते हैं। पर्यावरण को क्रियात्मक रूप देकर तत्परता से लागू किया जाए, इस संबंध में समुचित प्रयास होने चाहिए।

पर्यावरण–प्रदूषण सारे समाज के लिए चिंता का विषय है। इसे स्कूल के पाठ्यक्रम में व्यवस्थित रूप से पढ़ाने की आवश्यकता है।

छात्राों को स्वयं कार्यरत होने हेतु अनुमति प्रदान की जाए। यदि कृशि विज्ञान का विद्यार्थी पौधे लगाने, खाद देने और उसके बढ़ने की दर के बारे में प्रायोगिक ढंग से सीख लेता है, जो उसने कक्षा में अध्ययन कर रखा है, तो यह व्यावहारिक रूप से समस्या के समाधन में सहायक ही होगा। इसी प्रकार पर्यावरण के संतुलन के संबंध में भी पुस्तकीय ज्ञान को व्यवहार में लाने से आसपास के

पारिस्थितिकी तंत्रा को संतुलित रखने हेतु किए गए कार्य स्थायी एवं प्रभावशाली हो सकते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इस प्रकार के प्रभावशाली कदमों से युवा पीढ़ी ऐसा सोचने पर विवश हो जाएगी कि यदि पर्यावरण विनाश लीला इसी भांति चलती रही तो मानव लीला समाप्त होने में अधिक समय नहीं लगेगा। यह विश्व की आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से विकसित सभ्यता, सिंधु घाटी सभ्यता, माया सभ्यता तथा अन्य पुरानी सभ्यताओं की तरह विष्व के मान चित्रा से विलुप्त हो जाएगी। अतः यह अति आवश्यक है कि पर्यावरण सुधार में छात्रा अध्यापक व अभिभावक स्वाभाविक एवं भावनात्मक रूप से एक जुट हों।

सन्दर्भ

1. ध्वन, एस. के पर्यावरण शिक्षा पद्धति
2. w.w.w. Internet wiki pedia